

है अेम कहेते है. आहाहा ! जैसा उसका ध्रुव स्वरूप है. अतीन्द्रिय अनंत गुणका पिंडरूप प्रभु ! सूक्ष्म विषय है ! अे विशेष कहेगा १४ ने १५ (गाथा) में, जो (आत्मामें) असंप्य प्रदेश है उसमें दरेक प्रदेश उपर पर्याय है. रात्रिको कडा था थोडा, असंप्य प्रदेश है तो उपर उपर प्रदेश ने पर्याय है अैसा नई. जो असंप्य प्रदेश अंदर है, उसमें ली पर्याय उपर है. अे पर्यायको प्रदेश दीठ जो पर्याय उपर है, अे प्रदेश दीठ जो पर्यायकी समीपमें ध्रुवता पडी है. असंप्य प्रदेशका उपर उपर आ पर्याय है अैसा नई. दरेक प्रदेशमें पर्याय उपर है, जीष्णी वात भाँ ! आहाहा ! अे प्रदेशकी असंप्य प्रदेशमें दरेककी प्रदेश उपर पर्याय है. उसको अंदर ध्रुव जो रीज है, पर्यायके समीपमें असंप्य प्रदेशमें ध्रुव रीज है. आहाहा ! उसको यहां शुद्धनय कहेनेमें आया है. अे शुद्धनयका विषयकी दृष्टि जे अंदर पर्याय, सारी पर्याय, अंदर मध्यमें असंप्य प्रदेश है अंदर उसकी ली उपर पर्याय है अे अंतर ध्रुवमें (पर्यायको) जूकाना. सूक्ष्म है भाँ ! समजमें आया ? तो त्यां शुद्धनय प्रगट होती है अेम कहेते है. आहाहा !

पर्याय दृष्टिका अवलंबन छोडकर त्रिकाणी, पर्यायकी समीपमें ध्रुव अनादि अनंत नित्यानंद प्रभु अे पडा है, त्यां आगण पर्यायको ले जाना. आहाहा ! सूक्ष्म विषय है भाँ ! तब वो शुद्धनय प्रगट होती है. अे विषय जे आनंदकंद प्रभु है, वो पर्यायमें प्रगट होता है. समजमें आया ? आहाहा ! जो पर्यायमें अेक समयकी पर्याय अंश परलक्षी जो है, उसको छोडकर दरेक प्रदेशमें पर्याय जो है अे पर्यायको अंदरमें जूकनेसे, आहाहाहा... आ भाँ उपरका प्रदेश, अंदरका प्रदेश सब प्रदेश, सब प्रदेश उपर पर्याय है, तो वो पर्यायको अंतर ध्रुवमें जूकनेसे शुद्धनय प्रगट होती है अेम कहेते है. आहाहाहा !

सूक्ष्म है इवे १४ ने १५ का उपोद्घात है. १४ भी गाथाका उपोद्घात है, १४ में अबद्ध स्पृष्ट बतायेगा. अंदर वस्तु जो वस्तु ध्रुव जो रीज है अे तो रागका संबंधमें बंधरूप (है) ही नई, समजमें आया ? अैसी जो रीज अंदर है, उसकी दृष्टि लगानेसे अे जे शक्तिरूप जो है, अे पर्यायमें शुद्धनयका स्वभाव पर्यायमें प्रकाशमान होता है. आहाहाहा ! है ? शुद्धनय ! आ तो गंभीर गाथा है भाँ ! आत्म स्वभावको प्रगट करता हुआ, प्रकाशमान लाता हुआ, आहाहा ! जे स्वरूप है अे पर्यायमें प्रकाशमान होता हुआ. समजमें आया ? प्रकाश आत्मस्वभावको प्रगट करता, जे शक्तिरूपे, ध्रुवरूपे था. आहाहा... उसका दृष्टि करनेसे अे शक्तिमेंसे व्यक्तता अंश सब पवित्र परमात्म स्वभावकी व्यक्तता पर्यायमें आती है. आहाहाहा ! पंडितज ! है ? अेक शब्दमें तो बहोत लिया है. आहाहा !

दरेक प्रदेशमें पर्याय ली है और ध्रुव ली है. तो वो अंतर्भुभी दृष्टि करनेसे, पर्यायको ध्रुव तरफ जूकनेसे, जो शुद्ध वस्तु है अे पर्यायमें प्रकाशमान प्रगट होता है. समजमें आया ? वस्तु बहु, १४ अने १५ अे तो जैनशासन है. आहा... पंटरमें अेमां तो कहेगा. आ उपोद्घात १४ की है. आहाहा !

जेने अपना द्रव्य स्वभाव जो पर्यायसे त्मिन्न अंदर तणीया तणीया तणमें पाताण पडा है अंदर, आहाहा... वो तरफकी नय नाम दृष्टि अंदर लगानेसे, आत्म स्वभाव प्रगट होता है. पर्यायमें सम्यग्दर्शन ज्ञानमें, अे सारी पूर्ण रीज है उसका ज्ञान होता है ने उसकी प्रतीति होती

है. आहाहाहा ! छातां वो प्रतीति ने ज्ञानकी पर्यायमें पूर्ण स्वरूप आता नहीं. પણ पूर्ण स्वरूपका प्रतीत अने जो पर्याय कुछ इसमें पूर्ण यीज जितनी है छतना प्रगटपणे प्यालमें ब्रह्ममें आ जाता है. आहाहाहा ! आवो विषय. समजमें आया ?

शुद्धनय, आत्मस्वभाव अटले त्रिकाणी स्वभावको, आहाहाहाहा... प्रगट करता हुआ शक्तिमेंसे व्यक्तता करता हुआ. (श्रोता:- अरुणा नया धर्म निकाला) आ धर्म, (श्रोता:- पर्याय धर्म तो नया ही है) शैठ अेम कहेते है के आ नया धर्म निकाला है. नया नथी प्रभु ! अे आदि - अंत रहित भगवान अंदर बिराजते है, अे आयेगा अत्मी, उसका तरङ्क, जूकाव करके जो शक्तिमेंसे व्यक्तता अनंत गुणकी वेदनमें आती है, अे शुद्धनय प्रगट कुछ अेम कहेनेमें आता है.

भाई आ तो शब्दे शब्दनी तुलनामां अेक शब्द भी ओछा वत्ता हो तो डेरडार हो जाय अैसी यीज है. आहाहाहा ! समजमें आया ? शुद्धनय आत्मस्वभावको नाम त्रिकाणी शायक स्वभावको ध्रुव स्वभावको प्रगट करता हुआ अे पर्यायमें शक्तिकी व्यक्तता प्रगट करता हुआ, उदय होता है प्रसिद्धिमें आता है बहार. आहाहाहा ! शुद्ध अनुभव ज्यां हुआ सम्यग्दर्शन ज्ञानमें, तो इसमें सारा आत्मा प्रसिद्धि (में) आया, के आ आत्मा अैसा है अैसी पर्यायमें प्रसिद्धि आछ. आ टीकाका नाम आत्मप्याति है ने ? आ टीकाका नाम आत्मप्याति है, आहाहाहा... तो अे आत्म स्वभावको प्रगट करता हुआ पर्यायमें निर्मणता अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद आता हुआ. आहाहा !

“परभावभिन्नम्” पहेलां अस्तित्से कहा प्रगट अैसा हुआ. आहाहा... पण कैसे हवे के परभावभिन्नम् “परद्रव्य, परद्रव्यके भाव और परद्रव्यके निमित्तसे होनेवाला अपना विभाव” शुभ अशुभ विकल्प तीनों बोल अे परभावमें तीनों बोल आया, परभावमें तीनों बोल आया, परद्रव्य कर्म आदि, परद्रव्यका भाव उदय आदि, उसका उदय हों, कर्ममें उदय आना वो परद्रव्यका भाव, और अे निमित्तसे अपनेमें जो विभाव होता है अे त्रीज बोल हुआ, आहाहाहा... अे तीनोंसे भगवान् भिन्न. आहाहाहा ! है ? आ तो अल्प शब्द है, संतोकी वाणी है. आहाहा... सर्वज्ञ अनुसारिणी वाणी है. तो उसमें तो मर्म गर्भ बहोत भरा है.

तो कहेते है के परभावभिन्नम्, पहेले आत्म स्वभाव प्रगट हुआ शुद्धताका आनंदका अनुभव आया, और अनंत शक्ति जो है उसकी अेक अंश व्यक्तता प्रगट शुद्धनयसे हुआ, पण वो कैसे हुआ ? के परद्रव्यसे भिन्न हुआ. कोछ रागसे, कर्मसे, कर्मका भावसे और कर्मका निमित्तसे अपनेमें हुआ (नहीं). विकारसे तीनोंसे परभावसे भिन्न हुआ. आहाहाहा... अैसा कहेनेमें अैसा कहेते है के कोछ अैसे कहे के व्यवहार रत्नत्रय जो राग है उससे निश्चय पर्याय उत्पन्न होगी, तो यहां कहेते है के परभावसे भिन्न प्रगट होता है. समजमें आया ? आहाहा !

अनंतकाणमां कत्मी अेक सेकंड भी अपना द्रव्यस्वभाव क्या है, उसे स्पर्श नहीं किया. आहाहा.. समजमें आया ? अे परभावसे भिन्न, आहाहा... और भिन्न है, और प्रगट पर्यायमें हुआ, पण अे वस्तु कैसी है ? आपूर्णम्, आपूर्णम्, आ...पूर्णम् “आत्मस्वभाव

‘आ’ संपूर्ण रूपसे पूर्ण है।” ‘आ’नो अर्थ अे किया. आ अतिशयथी अतिशय स्वरूप संपूर्णरूपसे पूर्ण है. भगवान तो पूर्णरूप अंदर समस्त लोकालोकको जाननेवाली शक्तिरूप आत्मा है. कार्यमें अर्ही अत्यारे अे बात नर्ही लिया. आहाहा !

उसका स्वभाव अे भगवानका, भगवान ही आत्माको अेम कहेते है. उसको समस्त लोकालोकका ज्ञाता (कहा) है, सारा लोकालोकका ज्ञायक स्वभाव ज्ञाता है. कोछ यीजका कर्ता नर्ही ने कोछ यीजसे अपनेमें मोक्ष पर्याय धर्मकी पर्याय होती नर्ही. आहाहा ! समजमें आया ? (श्रोता:- कोछ यीज माने क्या ?) कोछ यीज नाम राग कहा ने ? राग, परद्रव्य, परद्रव्यका परद्रव्यमें रहा भाव, और परद्रव्यका निमित्तसे अपनेमें हुआ विभाव, उससे भिन्न अपना आत्मस्वभावकी शक्तिकी व्यक्तता कुछ अे स्वभाव कैसा है ? के आपूर्णम्.

संपूर्णरूपसे पूर्णज्ञानधन, आनंदधन, दर्शनधन है. आहाहाहा ! यह आपूर्णम् ‘आ’ नाम समस्त प्रकारे ‘आ’ नाम अतिशयथी ‘आ’ नाम विशेष प्रकारे संपूर्णरूपसे पूर्ण है, आहाहाहा ! भगवानका स्वभाव आत्माका पूर्ण पूर्ण पूर्णरूप है अे आवरण तो नर्ही, अशुद्धता तो नर्ही, पण अपूर्णता नर्ही. आहाहाहा ! अैसी यीजको आहा.. समस्त लोकालोकको प्रगट करता है, शक्ति अैसी है के लोकालोकको जाने अैसी सम्यग्दर्शनमें प्रतीत हुआ है. आहाहाहाहा ! समजमें आया ? छर्ते सम्यग्दर्शनकी पर्यायमें अे संपूर्ण लोकालोक जाननेकी शक्ति है. अे यीज सम्यग्दर्शनकी पर्यायमें नर्ही आती, पण पर्यायमें अे लोकालोक जाननेकी शक्ति है, इसका सामर्थ्य है, अैसा ज्ञान आ जाता है. अैसी प्रतीति आती है श्रद्धामें. समजमें आया ? आहाहा !

“क्योकि ज्ञानमें भेद कर्म संयोगसे है.” वस्तु स्वभावमां तो कंछ संबंघ है नर्ही. आहाहा ! “शुद्धनयमें कर्म गौण है.” अे अल्पता है निमित्तके आश्रितसे कुछ ये है. अल्पता अपने कारणसे पण निमित्तके आश्रये अल्पता है ये यहां बात गौण करके, पेटामां लेकर, लक्ष छोडाकर, अे त्रिकाणी ज्ञायकभावकी दृष्टि है अेमां अपूर्णता, अशुद्धता है ही नर्ही, परभावसे भिन्न कहेनेमें अशुद्धता है नर्ही, अने अपना पूर्ण स्वभाव कहेनेमें अपूर्णता है नर्ही. समजमें आया ? आहाहा !

और वो “आदि-अंत विमुक्तम्” आहाहाहा ! भगवान आत्माका आत्मस्वभाव आदि अंत पूर्व ने पश्चिम काणसे तो भिन्न है. उसमें कोछ पहेले काण था ने पछी आ था अैसा है नर्ही. आहाहा ! “आदि अंत विमुक्तम्” पहेलांने काणमें था यहां ने पछीने काणमें नाश होगा अैसा है नर्ही. “आदि अंत विमुक्तम्” जिसके काणमें आदि नर्ही ने जिसके काणमें अंत नर्ही, अैसा आदि अंतसे विमुक्त है. आहाहा ! आ पर्यायकी बात नर्ही वस्तुकी. ये आदि अंत विमुक्तम्, अेकला मुक्त नर्ही, विमुक्तम्. आहाहाहा ! है ! भगवान पूर्णानंद परमात्म स्वरूप अे आदि अने अंत रहित है अनादि अनंत है. उसकी शरुआत कुछ है ने पीछे अंत होगा अैसा है नर्ही. आहाहाहा !

अर्थात् किसी आदिसे लेकर और किसीसे उत्पन्न नर्ही किया गया, और कभी भी किसीसे जिसका विनाश नर्ही होता, अैसे पारिणामिक भावको प्रगट करता है. आहाहाहा ! पारिणामिक

अटले सहज स्वभाव. पाठमां तो असा आता है ने पंयास्तिकायमें छप्पन गाथा परिणामी भाव, परिणामी भाव असा पाठ है संस्कृतमें पंयास्तिकाय पद गाथा परिणामी भाव-भाव छ पण परिणामी भाव अ परिणाम अटले पर्याय आंही न लेना. परिणामी भाव सहज भावे रहा, पारिणामिक भाव अ त्रिकाणीभाव है. पंयास्तिकायमें छप्पन गाथामें, पांय भावकी व्याख्या आती है. सब हो गछ व्याख्या तो. सहज स्वभाव अ पारिणामिक नाम सहज स्वभावे सहज स्वभावे जे त्रिकाण है उसको यहां अ पारिणामिकभाव कहेते है. उदय उपशम क्षयोपशम क्षायिक अ तो पर्यायका भेद है, अ यार उसमें है नहीं. आहाहाहा ! क्षायिकभावकी पर्यायसे भी आत्मा भिन्न है. आहाहाहा ! समजमें आया ?

अैसे पारिणामिकभाव, जिसमें क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम ने उदय, उदय तो पहेले कहे दिया, परभावसे भिन्न पण अहीया तो हवे उपशम, क्षयोपशम ने क्षायिक आदि जे पर्याय है उससे भी भिन्न परमपारिणामिक सहजभाव-भाव त्रिकाण, क्षायिकभावकी तो उत्पत्ति होती है. समजमें आया ? तो अे नहीं. अहीया तो त्रिकाण, उत्पन्न ने विनाश रहित जे त्रिकाण स्वभाव है. आहाहाहा ! आवुं स्वरूप छे प्रभु ! अे ज्ञानका दण पडा है, ज्ञानका सागर अंदर है ध्रुव, पाणीका प्रवाह जे है अे अैसे चलते है, अने आ प्रवाह ध्रुव-ध्रुव-ध्रुव-ध्रुव-उर्ध्व-उर्ध्व-अैसे चले. अे आदि-अंत विनाकी यीज है. आहाहा ! उर्ध्व प्रययमें आते है ने वो प्रवचनसार ८३ गाथा. आयत समुदाय, सामान्य समुदाय, अे आते है, गुणनो समुदाय अेक ने आयत नाम पर्यायका समुदाय सामान्य. आहाहाहा ! तो कहेते है छनसे पारिणामिक ज्ञायकभाव, पारिणामिक क्युं लिया ? उसको सहज स्वभाव बताना है वो, नहीं तो पारिणामिकभाव तो परमाणुमें भी है पण अे पारिणामिकभाव ज्ञायकभाव है. त्रिकाणी ज्ञायकभावको अहीया पारिणामिकभाव कहेनेमें आया है. आहाहा ! भावको प्रगट करते है अहीया.

और वह आत्मस्वभावको 'अेक' सर्व भेदभावोंसे रहित, आहाहाहा... क्षायिककी पर्याय ने क्षयोपशमकी पर्याय ने बधा भेदभावोंसे रहित, आहाहा... अेकाकार प्रगट करता है. अेकरूप ध्रुव है (वो) उसको ज्ञानमें श्रद्धामें आता है. समजमें आया ? अध्यात्मनी वातुं बहु जीषी है भाछ ! अे कोछ शब्दोमां भले होय. पण भाव उसका बहोत गंभीर है. अंदरमें स्वभाव पारिणामिकभाव सर्व भेदोसे रहित, क्षायिक ने उपशम ने क्षयोपशम ने उससे भी रहित, अेकाकार प्रगट करता है. अेक स्वरूपे त्रिकाणी है अे प्रगट करता है. समजमें आया ? आवी वातुं छे. आकरी पडे अटले लोकोंने, है परम सत्य वात भाछ ! अरे उसका आश्रय लिया नहीं कभी, उसके शरणे गया नहीं. मंगण स्वरूप भगवान त्रिकाण है, अे मंगण स्वरूप ही त्रिकाण है. उसके शरणे गया नहीं. तो अे वस्तु उसके शरणे जानेसे पर्यायमां अेकरूप है, असा ज्ञाननेमें आता है, पर्यायमां अे वस्तु अेकरूप त्रिकाण है अैसे ज्ञाननेमें आता है, समजमें आया ? आहाहा ! आवुं छे, शेठ कहे छे ने के नवुं काढ्युं ? नवुं नथी आ तो. आहाहा !

परमात्म स्वरूपे बिराजमान, आदि अंत रहित, और लोकालोकको ज्ञाननेकी शक्ति, लोकालोकको अपना माननेका भाव नहीं, पण लोकालोकको ज्ञाननेकी शक्तिवाणा अे तत्त्व है आहाहा ! अैसे अेकाकार प्रगट करता है.

ઔર 'વિલીન સંકલ્પ વિકલ્પ જાલં' જિસમેં સમસ્ત સંકલ્પ વિકલ્પકા સમૂહ વિલિન હો ગયા હૈ. આહાહા ! પહેલા સંકલ્પ થા એ કહેતે હૈ સંકલ્પની વ્યાખ્યા દો તીન પ્રકારકી હૈ. એક પ્રકાર અહીંયા લીધા, "દ્રવ્યકર્મ, ભાવકર્મ, નોકર્મ આદિ પુદ્ગલ દ્રવ્યોંમેં અપની કલ્પના કરના એ સંકલ્પ" આહાહા ! રાગાદિ ભાવમેં અપની કલ્પના કરના એ સંકલ્પ મિથ્યાત્વકા હૈ. સમજમેં આયા ? હૈ ? ખુલાસો કર્યો છે એણે દ્રવ્યકર્મ જડ, ભાવકર્મ વિકલ્પ, નોકર્મ શરીર મન વાણી આદિ પુદ્ગલ દ્રવ્યોંમેં અપની કલ્પના કરના એ સંકલ્પ મિથ્યાત્વ હૈ. મિથ્યાત્વકો યહાં સંકલ્પ કહા હૈ. આહાહા ! ઔર શેયોંકે ભેદસે જ્ઞાનમેં ભેદ (ખંડ) જ્ઞાન હોના એ અનંતાનુબંધીકા વિકલ્પ બતાતે હૈ. 'સંકલ્પમેં' મિથ્યાત્વ હૈ ને 'વિકલ્પ'મેં અનંતાનુબંધીકા ભાવ હૈ. સો દો સે રહિત હૈ. હૈ ? શેયોંકે ભેદસે જ્ઞાનમેં ભેદ જે માલૂમ પડતે હૈ એ અનંતાનુબંધીકા લોભ કષાયકે કારણ, આહાહા... શેયોંકે ભેદસે જ્ઞાનમેં ભેદજ્ઞાન હોના, મેરા જ્ઞાન ભેદરૂપ હૈ ઐસા, સો વિકલ્પ હૈ. આહાહાહા ! સમજમેં આયા ? જ્ઞાનકી પર્યાયમેં શેયો અનેક હૈ એ જાનનેમેં આતા હૈ પણ અનેક શેયકા ભેદસે જ્ઞાનમેં ભેદ માલૂમ હો ગયા, જ્ઞાનમેં ભેદ પડયા એ વિકલ્પમેં અનંતાનુબંધીકા વિકલ્પ હૈ. સમજમેં આયા ?

"ઐસા શુદ્ધનય પ્રકાશરૂપ હોતા હૈ." દ્રવ્યકર્મ, ભાવકર્મ ને નોકર્મ મેરા હૈ, ઐસી દૃષ્ટિ છૂટ જાતી હૈ ઔર શેયોંમેં શેયોંકે જાનનેમેં જાણે જ્ઞાનમેં અનેકપણા આ ગયા, વો ભી છૂટ જાતા હૈ. આહાહા ! ઐસા શુદ્ધનય પ્રકાશરૂપ હોતા હૈ, પ્રગટ હોતા હૈ. આહાહા ! અથવા શુદ્ધનયકા કથન હવે શરૂઆત હોતા હૈ, એમ કહા હૈ. સમજમેં આયા ? કળશ ટીકા હૈ ને ઉસમેં ઐસા શબ્દ લિયા હૈ. યહાંસે શુદ્ધનય હવે કથનમેં ઉપદેશમેં આતા હૈ, ભાવસે લે તો શુદ્ધનય જો ચીજ હૈ ત્રિકાળી ઓ પર્યાયમેં પ્રગટ હોતી હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? ઈસ અર્થકા ગાથા સૂત્ર કહેતે હૈ લ્યો યહ તો ઉપોદ્ઘાત હુઆ.

* બહારના ઝાઝા શેયો જોવાની એને એવી ટેવ પડી ગઈ છે કે જેથી એને એકરૂપ સ્વજ્ઞેયમાં આવતાં ભાર લાગે છે, કઠણ લાગે છે. બહારના ઝાઝા શેયોમાં એને ભરેલું ભરેલું લાગે છે અને એકરૂપ જ્ઞેયોમાં (અંદરમાં) જવું તેને ખાલી ખાલી જવું લાગે છે, પણ ખરેખર તો બહારના ઝાઝા શેયો ખાલીખમ છે, એક સ્વજ્ઞેયમાં જ ભરેલું ભરેલું છે. અનંતા શેયોને જાણવા જતાં એકેયનું સાચું જ્ઞાન થતું નથી. એક સ્વજ્ઞેયને જાણવા જતાં અનંતા શેયનું જ્ઞાન સાચું થાય છે.

(દૃષ્ટિનાં નિધાન - ૨૦૩)

गाथा - १४

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्टं अणण्णयं णियदं ।
 अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं वियाणीहि ॥१४॥
 यः पश्यति आत्मानम् अबद्धस्पृष्टमनन्यकं नियतम् ।
 अविशेषमसंयुक्तं तं शुद्धनयं विजानीहि ॥१४॥

या खल्वबद्धस्पृष्टस्यानन्यस्य नियतस्याविशेषस्यासंयुक्तस्य चात्मनोऽनुभूतिः सा शुद्धनयः, सा त्वनुभूतिरात्मैव; इत्यात्मैक एव प्रद्योतते। कथं यथोदितस्यात्मनोऽनुभूतिरिति चेद्बद्धस्पृष्टत्वादीनामभूतार्थत्वात्। तथा हि- यथा खलु बिसिनीपत्रस्य सलिलनिमग्नस्य सलिलस्पृष्टत्वपर्यायेणानुभूयमानतायां सलिलस्पृष्टत्वं भूतार्थमप्येकान्ततः सलिलास्पृश्यं बिसिनीपत्रस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्, तथात्मनोऽनादिबद्धस्य बद्धस्पृष्टत्वपर्यायेणानुभूयमानतायां बद्धस्पृष्टत्वं भूतार्थमप्येकान्ततः पुद्गलास्पृश्यमात्मस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्।

यथा च मृत्तिकायाः करककरीरकर्करीकपालादिपर्यायेणानुभूयमानतायामन्यत्वं भूतार्थमपि सर्वतोऽप्यस्खलन्तमेकं मृत्तिकास्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्, तथात्मनो नारकादिपर्यायेणानुभूयमानतायामन्यत्वं भूतार्थमपि सर्वतोऽप्यस्खलन्तमेकमात्मस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्।

यथा च वारिधेवृद्धिहानिपर्यायेणानुभूयमानतायामनियतत्वं भूतार्थमपि नित्यव्यवस्थितं वारिधिस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्, तथात्मनो वृद्धिहानिपर्यायेणानुभूयमानतायामनियतत्वं भूतार्थमपि नित्यव्यवस्थितमात्मस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्।

यथा च काञ्चनस्य स्निग्धपीतगुरुत्वादिपर्यायेणानुभूयमानतायां विशेषत्वं भूतार्थमपि प्रत्यस्तमितसमस्तविशेषं काञ्चनस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्, तथात्मनो ज्ञानदर्शनादिपर्यायेणानुभूयमानतायां विशेषत्वं भूतार्थमपि प्रत्यस्तमितसमस्तविशेषमात्मस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्।

यथा चापां सप्तार्चिःप्रत्ययौष्ण्यसमाहितत्वपर्यायेणानुभूयमानतायां संयुक्तत्वं भूतार्थमप्येकान्ततःशीतमप्स्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्, तथात्मनः कर्मप्रत्ययमोहसमाहितत्वपर्यायेणानुभूयमानतायां संयुक्तत्वं भूतार्थमप्येकान्ततः स्वयं बोधं जीवस्वभावमुपेत्यानुभूयमानतायामभूतार्थम्।

ॐ शुद्धनयने गाथासूत्रधी कडे छे:-

अबद्धस्पृष्ट, अनन्य ने जे नियत हेणे आत्मने,
 अविशेष, अज्ञसंयुक्त, तेने शुद्धनय तुं ज्ञाज्ञे. १४.

ગાથાર્થ:- [ય:] જે નય [આત્માનમ્] આત્માને [અબદ્ધસ્પૃષ્ટમ્] બંધ રહિત ને પરના સ્પર્શ રહિત, [અનન્યકં] અન્યપણા રહિત, [નિયતમ્] ચળાચળતા રહિત, [અવિશેષમ્] વિશેષ રહિત, [અસંયુક્તં] અન્યના સંયોગ રહિત-એવા પાંચ ભાવરૂપ [પશ્યતિ] દેખે છે [તં] તેને, હે શિષ્ય ! તું [શુદ્ધનયં] શુદ્ધનય [વિજાનીહિ] જાણ.

ટીકા:- નિશ્ચયથી અબદ્ધ-અસ્પૃષ્ટ, અનન્ય, નિયત, અવિશેષ અને અસંયુક્ત-એવા આત્માની જે અનુભૂતિ તે શુદ્ધનય છે, અને એ અનુભૂતિ આત્મા જ છે; એ રીતે આત્મા એક જ પ્રકાશમાન છે. (શુદ્ધનય કહો યા આત્માની અનુભૂતિ કહો યા આત્મા કહો-એક જ છે, જુદાં નથી.) અહીં શિષ્ય પૂછે છે કે જેવો ઉપર કહ્યો તેવા આત્માની અનુભૂતિ કેમ થઈ શકે ? તેનું સમાધાન:- બદ્ધસ્પૃષ્ટવ આદિ ભાવો અભૂતાર્થ હોવાથી એ અનુભૂતિ થઈ શકે છે. આ વાતને દેષ્ટાંતથી પ્રગટ કરવામાં આવે છે:-

જેમ કમલિનીનું પત્ર જળમાં ડૂબેલું હોય તેનો જળથી સ્પર્શવારૂપ અવસ્થાથી અનુભવ કરતાં જળથી સ્પર્શવાપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ જળથી જરાય નહિ સ્પર્શવાયોગ્ય એવા કમલિની-પત્રના સ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં જળથી સ્પર્શવાપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે; એવી રીતે અનાદિ કાળથી બંધાયેલા આત્માનો, પુદ્ગલકર્મથી બંધાવા-સ્પર્શવારૂપ અવસ્થાથી અનુભવ કરતાં બદ્ધસ્પૃષ્ટપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ પુદ્ગલથી જરાય નહિ સ્પર્શવાયોગ્ય એવા આત્મસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં બદ્ધસ્પૃષ્ટપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે.

વળી, જેમ માટીનો, કમંડળ, ઘડો, ઝારી, રામપાત્ર આદિ પર્યાયોથી અનુભવ કરતાં અન્યપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ સર્વતઃ અસ્ખલિત (-સર્વ પર્યાય-ભેદોથી જરાય ભેદરૂપ નહિ થતા એવા) એક માટીના સ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં અન્યપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે; એવી રીતે આત્માનો, નારક આદિ પર્યાયોથી અનુભવ કરતાં (પર્યાયોના બીજા-બીજાપણારૂપ) અન્યપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ સર્વતઃ અસ્ખલિત (સર્વ પર્યાયભેદોથી જરાય ભેદરૂપ નહિ થતા એવા) એક ચૈતન્યાકાર આત્મસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં અન્યપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે.

જેમ સમુદ્રનો, વૃદ્ધિહાનિરૂપ અવસ્થાથી અનુભવ કરતાં અનિયતપણું (અનિશ્ચિતપણું) ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ નિત્ય-સ્થિર એવા સમુદ્રસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં અનિયતપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે; એવી રીતે આત્માનો, વૃદ્ધિહાનિરૂપ પર્યાયભેદોથી અનુભવ કરતાં અનિયતપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ નિત્ય-સ્થિર (નિશ્ચલ) એવા આત્મસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં અનિયતપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે.

જેમ સુવર્ણનો, ચીકણાપણું, પીળાપણું ભારેપણું આદિ ગુણરૂપ ભેદોથી અનુભવ કરતાં વિશેષપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ જેમાં સર્વ વિશેષો વિલય થઈ ગયા છે એવા સુવર્ણસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં વિશેષપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે; એવી રીતે આત્માનો, જ્ઞાન, દર્શન આદિ ગુણરૂપ ભેદોથી અનુભવ કરતાં વિશેષપણું

ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ જેમાં સર્વ વિશેષો વિલય થઈ ગયા છે એવા આત્મસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં વિશેષપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે.

જેમ જળનો, અગ્નિ જેનું નિમિત્ત છે એવી ઉષ્ણતા સાથે સંયુક્તપણારૂપ-તત્ત્વપણારૂપ-અવસ્થાથી અનુભવ કરતાં (જળને) ઉષ્ણપણારૂપ સંયુક્તપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ એકાંત શીતળતારૂપ જળસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં (ઉષ્ણતા સાથે) સંયુક્તપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે; એવી રીતે આત્માનો, કર્મ જેનું નિમિત્ત છે એવા મોહ સાથે સંયુક્તપણારૂપ અવસ્થાથી અનુભવ કરતાં સંયુક્તપણું ભૂતાર્થ છે-સત્યાર્થ છે, તોપણ જે પોતે એકાંત બોધરૂપ (જ્ઞાનરૂપ) છે એવા જીવસ્વભાવની સમીપ જઈને અનુભવ કરતાં સંયુક્તપણું અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે.

ભાવાર્થ:- આત્મા પાંચ પ્રકારથી અનેકરૂપ દેખાય છે: (૧) અનાદિ કાળથી કર્મપુદ્ગલના સંબંધથી બંધાયેલો કર્મપુદ્ગલના સ્પર્શવાળો દેખાય છે, (૨) કર્મના નિમિત્તથી થતા નર, નારક આદિ પર્યાયોમાં ભિન્ન ભિન્ન સ્વરૂપે દેખાય છે, (૩) શક્તિના અવિભાગ પ્રતિચ્છેદ (અંશ) ઘટે પણ છે, વધે પણ છે-એ વસ્તુનો સ્વભાવ છે તેથી તે નિત્ય-નિયત એકરૂપ દેખાતો નથી, (૪) વળી તે દર્શન, જ્ઞાન આદિ અનેક ગુણોથી વિશેષરૂપ દેખાય છે અને (૫) કર્મના નિમિત્તથી થતા મોહ, રાગ, દ્વેષ આદિ પરિણામો સહિત તે સુખદુઃખરૂપ દેખાય છે. આ સૌ અશુદ્ધદ્રવ્યાર્થિકરૂપ વ્યવહાર નયનો વિષય છે. એ દૈષ્ટિ (અપેક્ષા) થી જોવામાં આવે તો એ સર્વ સત્યાર્થ છે. પરંતુ આત્માનો એક સ્વભાવ આ નયથી ગ્રહણ નથી થતો, અને એક સ્વભાવને જાણ્યા વિના યથાર્થ આત્માને કેમ જાણી શકાય ? આ કારણે બીજા નયને-તેના પ્રતિપક્ષી શુદ્ધદ્રવ્યાર્થિક નયને-ગ્રહણ કરી, એક અસાધારણ જ્ઞાયકમાત્ર આત્માનો ભાવ લઈ, તેને શુદ્ધનયની દૈષ્ટિથી સર્વ પરદ્રવ્યોથી ભિન્ન, સર્વ પર્યાયોમાં એકાકાર, હાનિવૃદ્ધિથી રહિત, વિશેષોથી રહિત અને નૈમિત્તિક ભાવોથી રહિત જોવામાં આવે તો સર્વ (પાંચ) ભાવોથી જે અનેકપ્રકારપણું છે તે અભૂતાર્થ છે-અસત્યાર્થ છે.

અહીં એમ જાણવું કે વસ્તુનું સ્વરૂપ અનંત ધર્માત્મક છે, તે સ્યાદ્વાદથી યથાર્થ સિદ્ધ થાય છે. આત્મા પણ અનંત ધર્મવાળો છે. તેના કેટલાક ધર્મો તો સ્વાભાવિક છે અને કેટલાક પુદ્ગલના સંયોગથી થાય છે. જે કર્મના સંયોગથી થાય છે, તેમનાથી તો આત્માને સંસારની પ્રવૃત્તિ થાય છે અને તે સંબંધી સુખદુઃખ આદિ થાય છે તેમને ભોગવે છે. એ, આ આત્માને અનાદિ અજ્ઞાનથી પર્યાયબુદ્ધિ છે; અનાદિ-અનંત એક આત્માનું જ્ઞાન તેને નથી. તે બતાવનાર સર્વજ્ઞનું આગમ છે. તેમાં શુદ્ધદ્રવ્યાર્થિક નયથી એ બતાવ્યું છે કે આત્માનો એક અસાધારણ ચૈતન્યભાવ છે તે અખંડ છે, નિત્ય છે, અનાદિનિધન છે. તેને જાણવાથી પર્યાયબુદ્ધિનો પક્ષપાત મટી જાય છે. પરદ્રવ્યોથી, તેમના ભાવોથી અને તેમના નિમિત્તથી થતા પોતાના વિભાવોથી પોતાના આત્માને ભિન્ન જાણી તેનો અનુભવ જીવ કરે ત્યારે પરદ્રવ્યના ભાવોરૂપ પરિણમતો નથી; તેથી કર્મ બંધાતાં નથી અને સંસારથી નિવૃત્તિ થઈ જાય છે. માટે પર્યાયાર્થિકરૂપ વ્યવહારનયને ગૌણ કરી અભૂતાર્થ (અસત્યાર્થ)

કલ્પો છે અને શુદ્ધ નિશ્ચયનયને સત્યાર્થ કહી તેનું આલંબન દીધું છે. વસ્તુસ્વરૂપની પ્રાપ્તિ થયા પછી તેનું પણ આલંબન રહેતું નથી. આ કથનથી એમ ન સમજી લેવું કે શુદ્ધનયને સત્યાર્થ કલ્પો તેથી અશુદ્ધનય સર્વથા અસત્યાર્થ જ છે. એમ માનવાથી વેદાંતમતવાળા જેઓ સંસારને સર્વથા અવસ્તુ માને છે તેમનો સર્વથા એકાંત પક્ષ આવી જશે અને તેથી મિથ્યાત્વ આવી જશે, એ રીતે એ શુદ્ધનયનું આલંબન પણ વેદાન્તીઓની જેમ મિથ્યાદૈષ્ટિપણું લાવશે. માટે સર્વ નયોના કથંચિત્ રીતે સત્યાર્થપણાનું શ્રદ્ધાન કરવાથી જ સમ્યદૈષ્ટિ થઈ શકાય છે. આ રીતે સ્યાદ્વાદને સમજી જિનમતનું સેવન કરવું, મુખ્ય-ગૌણ કથન સાંભળી સર્વથા એકાંત પક્ષ ન પકડવો.

આ ગાથાસૂત્રનું વ્યાખ્યાન કરતાં ટીકાકાર આચાર્યે પણ કહ્યું છે કે આત્મા વ્યવહારનયની દૈષ્ટિમાં જે બદ્ધસ્પૃષ્ટ આદિ રૂપે દેખાય છે તે એ દૈષ્ટિમાં તો સત્યાર્થ જ છે પરંતુ શુદ્ધનયની દૈષ્ટિમાં બદ્ધસ્પૃષ્ટાદિપણું અસત્યાર્થ છે. આ કથનમાં ટીકાકાર આચાર્યે સ્યાદ્વાદ બતાવ્યો છે એમ જાણવું.

વળી, અહીં એમ જાણવું કે આ નય છે તે શ્રુતજ્ઞાન-પ્રમાણનો અંશ છે; શ્રુતજ્ઞાન વસ્તુને પરોક્ષ જણાવે છે; તેથી આ નય પણ પરોક્ષ જ જણાવે છે. શુદ્ધદ્રવ્યાર્થિકનયનો વિષયભૂત, બદ્ધસ્પૃષ્ટ આદિ પાંચ ભાવોથી રહિત આત્મા ચૈતન્યશક્તિમાત્ર છે. તે શક્તિ તો આત્મામાં પરોક્ષ છે જ. વળી તેની વ્યક્તિ કર્મસંયોગથી મત્તિ-શ્રુતાદિ જ્ઞાનરૂપ છે તે કથંચિત્ અનુભવગોચર હોવાથી પ્રત્યક્ષરૂપ પણ કહેવાય છે, અને સંપૂર્ણજ્ઞાન જે કેવળજ્ઞાન તે જોકે છન્નસ્થને પ્રત્યક્ષ નથી તોપણ આ શુદ્ધનય આત્માના કેવળજ્ઞાનરૂપને પરોક્ષ જણાવે છે. જ્યાં સુધી આ નયને જીવ જાણે નહિ ત્યાં સુધી આત્માના પૂર્ણ રૂપનું જ્ઞાન-શ્રદ્ધાન થતું નથી. તેથી શ્રી ગુરુએ આ શુદ્ધનયને પ્રગટ કરી ઉપદેશ કર્યો કે બદ્ધસ્પૃષ્ટ આદિ પાંચ ભાવોથી રહિત પૂર્ણજ્ઞાનઘનસ્વભાવ આત્માને જાણી શ્રદ્ધાન કરવું, પર્યાયબુદ્ધિ ન રહેવું. અહીં કોઈ એવો પ્રશ્ન કરે કે-એવો આત્મા પ્રત્યક્ષ તો દેખાતો નથી અને વિના દેખ્યે શ્રદ્ધાન કરવું તે જાહું શ્રદ્ધાન છે. તેનો ઉત્તર:-દેખેલાનું જ શ્રદ્ધાન કરવું એ તો નાસ્તિક મત છે. જિનમતમાં તો પ્રત્યક્ષ અને પરોક્ષ-બન્ને પ્રમાણ માનવામાં આવ્યાં છે. તેમાં આગમપ્રમાણ પરોક્ષ છે. તેનો ભેદ શુદ્ધનય છે. આ શુદ્ધનયની દૈષ્ટિથી શુદ્ધ આત્માનું શ્રદ્ધાન કરવું, કેવળ વ્યવહાર-પ્રત્યક્ષનો જ એકાંત ન કરવો.

ગાથા ૧૪ નું પ્રવચન

જો પરસ્સદિ અપ્પાણં અબદ્ધપુટ્ટં અણ્ણયં ણિયદં ।

અવિસેસમસંજુત્તં તં સુદ્ધણયં વિયાણીહિ ॥૧૪॥

અબદ્ધસ્પૃષ્ટ, અનન્ય ને જે નિયત દેખે આત્મને,

અવિશેષ, અણસંયુક્ત, તેને શુદ્ધનય તું જાણજે.૧૪

ટીકા: નિશ્ચયસે ભગવાન આત્મા દ્રવ્યસ્વરૂપ ઈસકો શુદ્ધનય ભી કહીએ અને દ્રવ્ય સ્વરૂપ

भी कहीअे. अगियारभी गाथामें “भूदत्थं देसिदो द्द सुद्धणओ” भूतार्थ जे ध्रुव है उसको शुद्धनय कहेते है. नय अने नयका विषयको अध्यात्म दृष्टिमें छोड देता है. समजमें आया ? जो त्रिकाणी ज्ञायकस्वरूप भगवान पूर्णानंद प्रभु उसको ही शुद्धनय कहा है. नहीं तो शुद्धनयका तो वो विषय है पण विषय अने विषयीका भेद छोडकर, वो त्रिकाणी ज्ञायकभाव ध्रुव जो सम्यग्दर्शनका विषय है, उसको ही शुद्धनय कहेनेमें आया है. आहाहाहा ! आवुं हवे याद क्यां राभे आमां धंधा आडे नवराश न मणे. शेठ ! (श्रोता:- आज जानेवाला है शेठ) जानेवाला है ? समजमें आया ? आहाहा !

जे कोइ आत्माको अषद्ध, रागआदि कर्मआदिसे षद्ध नहीं, जैसे पस्सई नाम अंतरमें देभते है.

(१) अस्पृष्ट कर्मका विसंज्ञा परमाणु पुद्गल है कर्म होनेकी लायकातवाणा उससे भी अस्पृष्ट है. भगवान तो रागसे अस्पृष्ट है अने विसंज्ञा परमाणु साथमें है कर्मरूप परिणाम्या नहीं उसको भी स्पर्शसे रहित है. आहाहा !

(२) ‘अनन्य’ दरेकका अर्थ करेगा हों, अनन्य है, अनेरी अनेरी गति इसमें है नहि. ओ तो अनन्य है. ये तो अन्य अन्यसे अनन्य है. त्तिन्न है. आहाहा !

(३) ‘नियत’ पर्यायमें अनेकता दिभती है उससे भी वो त्तिन्न है.

(४) ‘अविशेष’ दर्शन ज्ञान यारित्रका भेद जो दिभते है ओ विशेष, उससे रहित है, अविशेष है सामान्य है. आहाहाहा !

(५) ‘असंयुक्त’ शुभ अशुभभावमें जो आकुणता होती है ये आकुणतासे संयुक्त नहीं. आहा ! ओ आकुणतासे सहित भगवान है नहीं अंदर. आहाहा !

जैसे आत्माकी अनुभूति, ऐसा आत्माका अनुभव, अही शुद्धनय कहेना है ने ? ज्ञानप्रधान कथन आ है, दर्शनप्रधान कथन आ है अने पंढरमीमें ज्ञानप्रधान कथन आयेगा. यौदमीमें दर्शनप्रधान कथन है. पंढरमीमें ज्ञानप्रधान कथन आयेगा. इज्ज तो सम्यग्दर्शनकी प्रतीत क्या है ? इसका कथन आ है और साथमें अनुभूतिका कथन है नयका ओ पंढरमें आयेगा. आहाहा !

आंहीया कहेते है कि जैसे आत्मा, जैसे आत्मा, पर्यायमें रागका संबंध है, ओ द्रव्यमें संबंध नहीं, ऐसा आत्माको अनुभूति, जैसे आत्माकी अनुभव होना पर्यायमें, आहाहा... ओ आत्मा जो कहा ओ तो अषद्ध स्पृष्ट है, वो पर्यायके बिनाकी यीज है, पण उसका अनुभव करना वो पर्याय है. आहाहा ! समजमें आया ? “इसकी अनुभूति ओ शुद्धनय है.” देभो अनुभूतिको शुद्धनय कहा. ओक बाजु शुद्धनय त्रिकाणको कहेते है और तो अनुभूतिको ही शुद्धनय कहा. क्योंकि शुद्धनयका विषयमें दृष्टि जब गछ, तो पर्यायमें अनुभूति हुँ, तो ओ शुद्धनय उसको भी कहेनेमें आता है. आहाहाहा ! है ?

“और ये अनुभूति आत्मा ही है.” पाछा अनुभूति जो हुँ, आनंदका वेदन आया ओ आत्मा है ओ कहे दिया. ओ पर्याय है ओ आत्मा है. रागादि था ओ अज्ञात्मा था, अने वस्तुका जे अनुभव हुआ ओ शुद्धनय हुआ. अने ओ पर्यायको आत्मा कहेते है. आहाहाहाहा ! जीणी वातुं बापा बहु भाई ! (श्रोता:- अलिंगग्रहणना २० मा ओलमां अनुभवनी पर्यायने

આત્મા કીધો.) એ અનુભૂતિ પર્યાયકી બાત છે. ૨૦ મા બોલની વાત એ. ૨૦ મા બોલની વાત મારે કહેવી 'તી પણ કીધું કાલ કહી ગયા છીએ. અલિંગગ્રહણના ૨૦ મા બોલમાં એ આયા છે, કે આત્મા અલિંગગ્રહણ અર્થાત્ આહાહા... એ દ્રવ્યકો છૂતે નહીં. ૨૦ મા બોલમાં એસા આયા છે, ક્યોંકિ દ્રવ્યકો છૂતે નહીં. તો દ્રવ્યકા અનુભવ હોતા નહીં, એ અનુભવ તો પર્યાયમેં હોતા છે. આહાહા ! તો આત્મા અલિંગગ્રહણ, અ-લિંગ ગ્રહણ, લિંગ નામ સામાન્ય ઉસકો નહીં છૂતે છે, ઓર નિર્મળ પર્યાયમેં આત્મા વેદનમેં આયા, એ નિર્મળ પર્યાય એ આત્મા કહેનેમેં આયા છે, આહાહાહા ! કલ કહા થા વો, પણ આ તો ભાઈ આવ્યા છે. સમજમેં આયા ? આહાહા !

વસ્તુ જો છે પૂર્ણ શુદ્ધ લોકાલોક જાનનેકી તાકાતવાળી ઓર પૂર્ણમ્ સંપૂર્ણમ્ અતિશયથી એ ચીજકો નય કહા. પણ ઉસકા અનુભવ હુઆ ઉસકો ભી અહીં શુદ્ધનય કહા. આહા ! ક્યુંકિ રાગ આદિકી પર્યાય દૈષ્ટિ છે એ અશુદ્ધનય છે. આહાહા ! ઓર ત્રિકાળ જ્ઞાયકભાવકી દૈષ્ટિ હુઈ અનુભૂતિ હુઈ, તો ત્રિકાળીકો ભી શુદ્ધનય કહા, અનુભૂતિકો ભી શુદ્ધનય કહા. આવી વાત છે. આવશે અર્થમાં કરશે, અને ઈસ પ્રકાર અનુભૂતિ આત્મા છે. પાછું દેખો અનુભૂતિ હુઈ એ ક્ષયોપશમભાવ છે, ક્ષાયિકભાવ છે. સમજમેં આયા ?

તો ત્યાં પહેલે નિકાલ દિયા થા કે જેને ક્ષયોપશમ ક્ષાયિકભાવ અંદરમેં છે નહીં. વાત તો એવી છે બાપુ ! જૈનધર્મ કોઈ અલૌકિક ચીજ છે, જૈનધર્મ કોઈ પક્ષ નહીં વસ્તુકા સ્વરૂપ છે એસા. આહાહા ! એ તો વસ્તુકા સ્વરૂપ એસા છે ઉસકા નામ જૈનધર્મ. આહા ! અને ઓલા જાપાનવાળાએ તો એસા કહા ને ? કે જૈનધર્મ કિસકો કહેતે છે ? જાપાની માણસ ૬૩ વર્ષકી ઉંમર ઓર લડકા ૧૭ વર્ષકી ઉંમર પણ ઐતિહાસિક શોધ કરકે ઈસને નિકાલા, જૈનધર્મ કયા ? કે અનુભૂતિ એ જૈન ધર્મ છે. અર્થાત્ વીતરાગ પર્યાયકા અનુભવ હોના, એ જૈનધર્મ છે. રાગકા અનુભવ હોના એ જૈનધર્મ નહીં. આહાહા !

વાંચ્યું તો હોયને એણે ઐતિહાસિક માણસ છે અને શોધક હોય માણસ તો વાંચીને તો... ભલે એ વાત એને બેસે ન બેસે એ બીજી વાત છે. આંહી તો જૈનના જન્મેલા વાણીયાના ધંધામાં પચાસ-સાઈઠ-સીતેર ગયા તોય, લખ્યું છે એણે બીચારાએ, અહીંયા તો બનીયા ને જો ધંધા છે ઉસમેં રોકકર આ કયા ચીજ છે ને ઉસકા કયા અનુભવ છે ને કયા પર્યાય છે ને કયા દ્રવ્ય છે, ઉસકા નિર્ણય કરતે નહીં. એ લિખા છે ઉસને. વાણીયાકે હાથમેં જૈનધર્મ આયા તો વાણીયા, વાણીયા છે વ્યવસાયમેં રૂક ગયા છે સારા, આખો દિ'.

(શ્રોતા:- વાણીયા દ્રવ્યને માને તો છે.) એ ક્યારે એ દ્રવ્યને માને ? દ્રવ્ય છે એસા ધારણામેં માન્યા છે. (શ્રોતા:- દ્રવ્ય એટલે પૈસા) કમાતે છે એ તો દ્રવ્ય તો ધૂળ છે. આહાહા ! કેમ હસમુખભાઈ ? (શ્રોતા:- ધૂળ કેમ કહેવાય) ધૂળ ને માટી પુદ્ગલકી પર્યાય છે. (શ્રોતા:- એના વિના શાક ન મળે.) શાક મળે કિસકો ? ઈસસે શાક મિલતા છે ? વો તો ચીજ જો આનેવાલી છે, વો તો કહેનેમેં નહીં આતા છે ? ખાનેવાલકા નામ દાને દાને છે, ઉસકા અર્થ કયા ? નામ લિખા છે અંદર ? પણ જે રજકણ ઉસકી પાસ આનેવાલા છે એ આયેગા, ઉસકા રાગસે આયેગા અને રાગ ન કરે તો આયેગા, એસા છે નહીં. જે રજકણો ઉસકી પાસ આનેવાલે છે એ આયેગા હી, નહીં આનેવાલા છે નહીં આયેગા એ. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

गोटीकाज, ओ तो केटले, पैसा सारुं क्वांय जाय छे, रभउे छे अमेरिका ने इमेरिका ने आहाहा ! छतां ओ रजकणो आनेवाला होय ओ आयेगा, उसका रागका प्रयत्नसे आते है ओ बिलकुल जूठ है (श्रोता:- ओक वार कडो के पैसा माटे जाय छे ने पाछा कडो के पैसा मणता नथी ?) कोषे कीधुं आवतुं नथी, ओ तो अहीया ओनी पासो आते है. युं कडा, उसकी पास आते है नही, नजुकमें आते है (श्रोता:- उसको मिलते नही है.) नही नही. उसका परमाणुका भी आत्मामें अभाव है. स्वभावका भाव है ने परमाणुका अभाव है, तो उसकी पास अंदर(पर) द्रव्य नही आता. आहाहा !

यहां कहेते है की ओ अनुभूति ओ आत्मा है, देभो छस प्रकार आत्मा ओक डी प्रकाशमान है. आहाहा ! उसका अर्थ किया, देभो उसमें, पंडितज ! जयचंद पंडित ! शुद्धनय आत्माकी अनुभूति, आत्मा सब ओक डी है. है ? आ अपेक्षासे समजाते है. शुद्धनय, आत्माकी अनुभूति और आत्मा तीनों ओक है. (श्रोता:- पर्यायने द्रव्य ओ ओक है ?) पर्याय ने द्रव्य ने दोहिको शुद्धनय कडा. आत्माको शुद्धनय कडा. अनुभूतिको शुद्धनय कडा. आहाहा... शुद्धनयको शुद्धनय कडा, त्रिकाणी विषयको अपेक्षासे ओ सब समजना याहीओ ने ? आहाहा !

जुओ, शुद्धनय कडो आत्माकी अनुभूति कडो नहीतर शुद्धनयका विषय तो ध्रुव त्रिकाण है, पण त्रिकाणको विषय किया तो पर्यायमें अनुभूति हुँ, अनुभूतिमें शुद्ध वस्तु प्रतीतमें आँ, तो पर्यायको भी अनुभूति शुद्धनय कहेनेमें आया. आहाहा ! आवुं हवे शीभवुं, गोभवुं (श्रोता:- पर्यायको भी द्रव्य कहे दिया) पर्यायको द्रव्य नही कडा, शुद्धनय कडा. ओ शुद्धनयका अर्थ ? ओ शुद्धनयके आश्रयसे जो पवित्रता प्रगट हुँ तो उसको भी शुद्धनय कडा, अने उसको आत्मा कडा पीछे. पवित्रता प्रगट हुँ ओ सम्यग्दर्शन ज्ञान ओ पर्याय है उसको आत्मा कडा. रागमें नही, राग अनात्मा है. छतना बतानेको अनुभूति जो सम्यग्दर्शन आदिकी है. उसको आत्मा कहेनेमें आया है. आहाहा... आवी वातुं छे.

(श्रोता:- ओक दके और कहे ओ.) वस्तु जो है वस्तु त्रिकाणी यीज जो भगवान आदि अंत रहित पर्यायमें आदि होती है ने अंत नाश होता है, पर्याय उत्पन्न हुँ तो आदि है, दूसरे समय व्यय होता है, आदि अंत हो गया तो वस्तु आदि अंत रहित है, तो उसमें पर्याय भी नही, असा आदि अंत रहित, संपूर्णम्- आपूर्णम्- परिपूर्णम् परसे विमुक्त ओ यीजको यहां शुद्धनय कडा, और उसका अनुभव किया उसको भी शुद्धनय कडा, और उसका अनुभव हुआ उसको आत्मा कडा. आहाहा ! क्योकि निर्मण पर्याय हुँ (तो वो) आत्मा है, रागकी पर्याय आत्मा नही छतना बतानेको अनुभूति जो निर्मण सम्यग्दर्शनज्ञान हुआ, ओ आत्माकी पर्याय निर्मणमेंसे निर्मण आँ तो निर्मण पर्यायको आत्मा कहेनेमें आया. समजमें आया ? आहाहाहाहा ! आवी यीज है.

१४ भी गाथा सम्यग्दर्शनकी मुष्यतासे आ कथन है. सम्यग्दृष्टिको, सम्यग्दर्शनमें त्रिकाणी आदि अंत रहित आत्मा दृष्टिमें आता है. समजमें आया ? आहाहाहाहा ! (श्रोता:- छसदिये आ शिक्षण शिबिर लगाया.) मैं तो लगाया नही, मैं तो कभी कडा डी नही. मैं तो कभी कडा डी नही, होता है आ. आ तीर्थ इंडका बनावो ओ भी मैं तो कभी कडा नही, यहां तो उपदेश

દેતે હૈ તત્ત્વકી બાત આંહી દૂસરી બાત હમારી પાસ હૈ નહીં. ઐસા મકાન બનાવો કે ઐસા પુસ્તક બનાવો હમ (ને) કભી કહા નહીં. એક આ બહેનકા પુસ્તક આયા મૈં (ને) તભી કહા થા. બાકી ઇતના ૨૦ લાખ છપ ગયા હૈ, હમે કભી કહા નહીં પુસ્તક બનાવો. આ આંહી તો ઉપદેશમેં આવે એ સમજો એ સમજો. એ લપમેં પડતે નહીં હમ ક્યાંય, સમજમેં આયા ?

આ મકાન બન્યા પહેલે કહ્યાને ? સ્વાધ્યાય મંદિર (સંવત) ૯૪ મેં તો હમ તો કભી કહા નહીં. કે બનાવો, ઐસા કહા થા હમ, કે તુમ બનાતે હો, હમ રહેના કે ન રહેના એ હમારે પ્રતિબંધમે નહીં હમ, રામજીભાઈ તો થા ને ૯૪ મેં, આ મકાન તમે બનાતે હૈ તો અમારે આંહી રહેના હી હૈ ઐસા કોઈ પ્રતિબંધ હમારેકો નહીં હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? એ કરનેવાલા આત્મા નહીં બાપા. એ કોણ કરે ભાઈ ! આહાહા !

આંહી તો કહેતે હૈ કે એ વસ્તુકો, ત્રિકાળીકો ભી શુદ્ધનય કહેનેમેં આયા, ઔર ત્રિકાળીકા અનુભવ હુઆ એ અનુભવકો હી શુદ્ધનય કહા, ઔર ત્રિકાળકો ભી આત્મા કહા અને અનુભૂતિકો ભી આત્મા કહા. સમજમેં આયા ?

હવે શિષ્ય પૂછતા હૈ, શિષ્યે એ સૂના આ બાત સૂના ને ઐસા ખ્યાલમેં આયા હૈ ઉસકો, કે આ કયા કહેતે હૈ ? તો પ્રભુ તમે કહેતે હો તો ઇસમેં તો અનુભવ કેસે હો ? જૈસે ઉપર કહા હૈ, વૈસે આત્માકી અનુભૂતિ કેસે હો સકતી હૈ ? એમ શિષ્યે પ્રશ્ન કિયા. તમે કહેતે હો કિ ભગવાન આત્મા રાગસે ભિન્ન, બંધસે, રાગસે ભિન્ન સામાન્ય વિશેષસે ભિન્ન સામાન્ય, પર્યાયસે ભિન્ન, નિયત એકરૂપ ઐસી ચીજકી એ અનુભૂતિ કેસી હોતી હૈ ? ઉસકા અનુભવ સમ્યગ્દર્શન ઔર સમ્યગ્જ્ઞાન અનુભૂતિ કેસે ? આ પ્રશ્ન આયા. પણ અહીં દર્શનકા વિષય હૈ. સમજમેં આયા ? આહા... ગાથા દર્શનકી હૈ, અનુભૂતિ કેસે હો સકતી હૈ ? આહાહાહા ! (શ્રોતા:- અનુભૂતિ કેમ થાય એ આજ તો બહાર પાડવું જ પડશે.) પણ અનુભૂતિ ઉસમેં જરી મર્મ હૈ. કયા ? દેખો ઉપર કહા વૈસા આત્માકી અનુભૂતિ કેસે હો સકતી હૈ ?

ઉસકા સમાધાન:- દેખો હવે, “કે બદ્ધસ્પૃષ્ટત્વ આદિ ભાવ અભૂતાર્થ હૈ” આહાહાહા ! શિષ્યકા પ્રશ્ન હુઆ કે ભગવાન આત્મા ઐસાકી અનુભૂતિ કેસી હોતી હૈ ? કે સૂન પ્રભુ “એ બદ્ધસ્પૃષ્ટત્વ આદિ ભાવ અભૂતાર્થ હૈ.” કાયમ રહેનેવાલી ચીજ નહીં હૈ. ઠીક ! રાગ આદિકા સંબંધ કે પર્યાયકા વિશેષ ભાવ, એ કાયમ રહેનેવાલી ચીજ નહીં. આહાહાહા ! બદ્ધસ્પૃષ્ટ આદિ ભાવો અભૂતાર્થ હૈ. આહાહા... એ કાયમ રહેનેકી ચીજ નહીં. કાયમ રહેનેવાલી ચીજ તો ભગવાન આત્મા પૂર્ણાનંદ એ કાયમ રહેનેકી ચીજ હૈ. આહાહાહા ! સમજાય એટલું સમજના પ્રભુ ! આ તો પરમાત્માની ગંભીર વાતો હૈ. આ કોઈ કથા વાર્તા નહીં. આ તો ત્રણ લોકનો નાથ સીમંધર ભગવાનકા મુખસે આઈ બાત એ કુંદકુંદાચાર્યે ઝીલી અને લે લિયા હૈ ! હૈ ? અને અમૃતચંદ્રાચાર્ય તો હજાર વર્ષ પીછે હુઆ પણ ઉસકા પેટ ખોલ દિયા એને, કે કુંદકુંદાચાર્ય આમ કહેતે હૈ, કહેવા માગતે હૈ ને ભગવાન ભી ઐસે કહેતે થે. આહાહા !

કયા જવાબ દિયા ? શિષ્યે પ્રશ્ન કિયા કે ઐસા આત્મા અબદ્ધસ્પૃષ્ટ આદિ હૈ ઉસકા અનુભવ કેસે હો ? (શ્રોતા:- પ્રશ્ન બહોત અચ્છા.) પ્રશ્ન હતો, એમ કે આ બદ્ધસ્પૃષ્ટ આદિ હૈ ને ? યહાં એમ કહેતે હૈ. આ બદ્ધસ્પૃષ્ટ રાગ આદિકા સંબંધ હૈ, પર્યાયમેં ભેદ હૈ દર્શન જ્ઞાન

यारित्रका विशेष है, है ने अनुभूति कैसे होती है ? है ? उसमेंसे परसे भिन्न कैसे होता है अम कहेते है. शिष्यका प्रश्नमें आ प्रश्न है, के रागका संबंध है, पर्यायमें विशेषता है, गुणका विशेष भेद है, ऐसी यीजमें उससे रहित अनुभूति कैसे होती है ? समजमें आया ? आहाहाहा ! अे आचार्य शिष्यना मुझमें ऐसा प्रश्न (रभ) लिया.

सून प्रभु अेक वार सून कहेते है. अे बद्धस्पृष्ट आदि भाव अभूतार्थ है, कायम रहेनेवाली यीज नहीं माटे उससे भिन्न अनुभूति हो सकती है, अेम कहेते है. राग आदिका संबंधने विशेष आदि पर्याय अने गुणभेद दर्शन ज्ञान यारित्र अे कायम रहेनेवाली यीज नहीं, अभूतार्थ होनेसे उससे भिन्न अनुभूति हो सकती है. आहाहाहा ! गाथा तो बहोत अर्थी आ गछ है. १३-१४, आहाहा ! आ तो नवमा दिन है ने तमारे, नहीं ? नवमा दिन है अगियार दिन बाकी है. आहाहा ! क्या कडा ? शिष्यका प्रश्न ऐसा है कि प्रभु आप आत्माको अबद्धस्पृष्ट आदि कहेते है पांच भोल, तो हमको तो पांच भोल सहित दिखते है. रागका संबंध है, पर्यायका विशेष है. गुण भेद हम दिखते है. तो उसमेंसे अनुभूति कैसे होती है ?

प्रभु सून अे बधा भेदभावो कायम रहेनेवाली यीज नहीं, अभूतार्थ है. आहाहाहा ! समजमें आया ? आ तो बापु भगवान त्रणलोकना नाथ, जिनेश्वरदेवना कथनो ने आ संतो तो उसका आडतीया है, आडतीया समजते हैं ? अेजन्ट ! आहाहा ! (श्रोता:- अनुभूति सोनगढमें होती है) सोनगढमें नहीं आत्मामें. आहाहा ! शिष्यका प्रश्न अे था के तुम अबद्धस्पृष्ट आदि आत्माको कहेते है, पण अर्द्धिया तो प्रत्यक्ष दिखते है, राग संबंध है, पर्यायका भेद है, गुण भेद दिखते है, तो अे उसमें अनुभूति कैसे हो ? ऐसा शिष्यका प्रश्न है छतना तो शिष्यने प्यालमें आ गया के आ बधा भेदभाव है उससे रहित अनुभूति करनेको कहेते है, तो अैसे कैसे हो ? अे यूँ कहेते है. आहाहाहा !

क्या कडा ? शिष्यका प्रश्न था के अैसे उपर कडा उपर कडा अैसे प्यालमें लिया उसने, है ? आहाहा... शब्दे शब्दमें भाव भरा है अंदर. तो आ शिष्य प्रश्न कहे उपर कडा है अे मेरे प्यालमें आया है. आप अैसे कहेते है उपर कडा हुआ अैसे शब्द आया ने ? अैसे सूनकर निकाल दिया अैसे नहीं. अेना प्यालमें आया है प्रभु आप अैसे कहेते हो. आहाहा ! गजब वात है. बापा ! श्रोता पण अैसे लिया है. है ? के अबद्धस्पृष्ट कडा अे प्यालमें उसको आ गया है तुम कहेते है अैसे, हम निकाल दिया हमारे प्यालमेंसे सूनकर अैसी बात नहीं. हमारे प्यालमें आया आप अैसे कहेते है पण मेरा प्रश्न है प्रभु ! अे राग ने विशेषका संबंध तो है, हवे उसमेंसे उससे रहित अनुभूति कैसे होगी ? आहाहाहा ! समजमें आया ?

शब्द क्या है ? शिष्य पूछता है के जैसा उपर कडा है, जैसा उपर कडा है, जे आपे कडा ओ अमारा प्यालमें आया है. आहाहाहाहा ! जैसा उपर कडा है, त्यां वजन है पंडितछ ! वैसे आत्माकी अनुभूति कैसे हो सकती है ? आप कहेते है वैसे अनुभूति कैसे होती है ? तो उसको कडा है समाधान: अे अबद्धस्पृष्ट आदि भाव है, पण अे अभूतार्थ है, कायम रहेनेवाली यीज नहीं, माटे कायम रहेनेवाली यीजकी अनुभूति होती है. आहाहा ! क्या कडा ? आहाहाहा ! कितनी टीका ! (श्रोता:- कितनी टीकाकी कितनी टीका) आहा ! प्रभु ! आप कहेते हो के आत्मा

बद्धस्पृष्ट आदि पांच भावसे रहित कहा तो उपर कहा हुआ ज्वालमें है आपे कहा अे पण अर्द्धीया बद्धस्पृष्ट तो है, भेद है विशेष है, दर्शन ज्ञान चारित्रका विशेष पण है, ने आप उसका अभेदकी अनुभूति करनेको कहेते है. अे कैसे हो सकता है ?

प्रभु सून ! अे पांच बोल जो कहा अे अभूतार्थ है. अेक समयकी स्थितिवाला है. आहाहाहाहा ! समजमें आया ? अेक समयकी स्थितिवाला है माटे अभूतार्थ है. आहाहा ! रागका संबंध, गुणका विशेष भेद, अेक समयका भेद है, अेक समयकी स्थिति है. आहाहाहाहा... तो अेक समयकी स्थिति है. केवणज्ञानकी स्थिति अेक समय है. उट गाथा नियमसार सात तत्वो अे नाशवान है, ज्व, अज्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष अे सात नाशवान है. तो उसमें केवणज्ञान भी नाशवान है अैसा कहा है. अेक समयकी स्थिति है. केवणज्ञानकी स्थिति है अेक समय है, गुणकी स्थिति त्रिकाण है, पण केवणज्ञानकी पर्याय तो अेनी स्थिति अेक समय है, तो आ तुम अभूतार्थ कहेते है उसकी स्थिति अेक समयकी है तो अभूतार्थ है तो उससे भिन्न अनुभूति हो सकती है. विशेष कहेगा. (श्रोता:- प्रमाण वचन गुरुदेव).